NCERT SOLUTIONS

CLASS - 8TH

aglasem.com

Class : 8th

Subject : Hindi

Chapter Name : भारत की खोज

Q1 ‘आखिर यह भारत है क्या? अतीत में यह किस विशेषता का प्रतिनिधित्व करता था? उसने अपनी प्राचीन शक्ति को कैसे खो दिया? क्या उसने इस शक्ति को पूरी तरह खो दिया है? विशाल जनसंख्या का बसेरा होने के अलावा क्या आज उसके पास ऐसा कुछ बचा है जिसे जानदार कहा जा सके?’

ये प्रश्न अध्याय दो के शुरूआती हिस्से से लिए गए है। अब तक अब पूरी पुस्तक पढ़ चुके होंगे। आपके विचार से इन प्रश्नों के क्या उत्तर हो सकते हैं? जो कुछ आपने पढ़ा है उसके आधार पर और अपने अनुभवों के आधार पर बताइए।

Answer. भारत की संस्कृति और सभ्यता एक ऐसी चीज़ रही है जिसने भारत को पूरे विश्व में प्रसिद्धी दिलायी। अपनी विशिष्ट और शालीन संस्कृति के कारण भारत को ना सिर्फ़ एक पहचान मिली बल्कि लोगों तक यह भी संदेश पहुँचा कि मानवता वास्तव में होती क्या है। भारत की असली शक्ति भारत की संस्कृति ही रही है। हालाँकि समय समय पर कई बाहरी लोगों ने आकर भारत पर राज्य किया और उन्होंने अपनी पूरी कोशिश की कि वे भारत की संस्कृति को जड़ से ख़त्म कर दे। उनकी इतनी कोशिशों के बावजूद वे ऐसा नहीं कर पाए और भारतीय संस्कृति अपने शालीन रुप में सदा विद्यमान रही। आज फिर से पाश्चात्य संस्कृति की कोशिशें हैं कि वह भारतीय संस्कृति पर अपना वर्चस्व क़ायम कर ले। वास्तव में पाश्चात्य संस्कृति अपना असर लोगों पर डाल रही है किन्तु फिर भी यह भारतीय संस्कृति को मिटा पाने में असक्षम है। भारतीय संस्कृति भारत का एक ऐसा तत्व है जिसे जानदार कहा जा सकता है।

Page : 126 , Block Name : प्रश्न अभ्यास

Q2 आपके अनुसार भारत यूरोप की तुलना में तकनीकी-विकास की दौड़ में क्यों पिछड़ गया था?

Answer.भारत तकनीकी विकास में यूरोप से इसलिए पीछे छूट गया क्योंकि यहाँ पर पुनर्जागरण काफ़ी देर में लागू हुआ था। जिस समय पूरा विश्व विकास की ओर अग्रसर था और तकनीक की खोज कर रहा था उस समय भारत अपने अस्तित्व को बचाने की कोशिश में लगा हुआ था।जब भारत को तकनीकी विकास करना चाहिए था उस समय भारत हमलों की चपेट में था। उत्तर भारत में लगातार बाहरी हमले हो रहे थे।इसके अलावा भारत आज़ाद भी नहीं था और वह अंग्रेजों का गुलाम था।स्वराज न होने के कारण भारतीय वैज्ञानिकों को आज़ादी से कार्य करने की अनुमति नहीं मिल पाती थी।बाहरी हमलों के नुक़सान से बचने के लिए भारत उनके बारे में उपाय खोजता रहता था जबकि और देश इस तरह की चीज़ों से बिलकुल परे थे।यूरोप के देशों को अपने अस्तित्व को बचाने के लिए कोई जद्दोजहद नहीं करनी पड़ रही थी क्योंकि वे आज़ाद थे और इस प्रकार वे तकनीकी विकास कर रहे थे।

Page : 126 , Block Name : प्रश्न अभ्यास

Q3 नेहरू जी ने कहा कि – “मेरे ख्याल से हम सब के मन में अपनी मातृभूमि की अलग-अलग तसवीरें हैं और कोई दो आदमी बिलकुल एक जैसा नहीं सोच सकते” अब आप बताइए कि-

aglasem.com

(क) आपके मन में अपनी मातृभूमि की कैसी तसवीर है?

(ख) अपने साथियों से चर्चा करके पता करो कि उनकी मातृभूमि की तसवीर कैसी है और आपकी और उनकी तसवीर (मातृभूमि की छवि) में क्या समानताएँ और भिन्नताएँ हैं?

Answer.(क) हमारे मन में अपनी मातृभूमि को लेकर एक शांति से भरपूर राज्य की तस्वीर है। हमारा देश अपनी संस्कृति को लेकर पूरे विश्व में अग्रणी रहा है। मातृभूमि की संस्कृति ही हमारी पहचान है।बात यदि यहाँ के भौगोलिक क्षेत्र की करें तो यहाँ के हरे भरे मैदान, नदियाँ, बड़े बड़े पर्वत और यहाँ बसने वाले तरह तरह के लोग हमारे देश को सुंदर बनाते हैं। अनेकता में एकता वाली मिसाल हमारी मातृभूमि के अलावा और कहीं नहीं मिल सकती है।

(ख) हमारे दोस्तों के मन में मातृभूमि को लेकर एक जैसी तस्वीर तो नहीं है लेकिन यह थोड़ी बहुत मिलती जुलती है। उनसे बात करने पर पता चलता है कि वे मातृभूमि से अटूट लगाव और प्रेम रखते हैं। यहाँ तक कि वे संकट के समय मातृभूमि पर अपने प्राण न्योछावर करने के लिए भी तैयार हैं। मातृभूमि से ऐसा लगाव देखकर वास्तव में हमें अपने देश पर गर्व होता है।

Page : 126 , Block Name : प्रश्न अभ्यास

Q4जवाहरलाल नेहरू ने कहा, “यह बात दिलचस्प है कि भारत अपनी कहानी की इस भोर-बेला में ही हमें एक नन्हें बच्चे की तरह नहीं, बल्कि अनेक रूपों में विकसित सयाने रूप में दिखाई पड़ता है।” उन्होंने भारत के विषय में ऐसा क्यों और किस संदर्भ में कहा है?

Answer.सिंधु घाटी सभ्यता भारतीय सभ्यता की प्रारंभिक अवस्था थी। उस प्रारम्भिक अवस्था में होते हुए भी भारत ने अपनी एक अलग पहचान बनायी और लोगों पर छाप छोड़ी। नेहरु जी ने इस बिंदु को सराहा और कहा कि भारतीय संस्कृति वास्तव में सबसे अलग संस्कृति है। भारत वैसे भी शिक्षा का केंद्र रहा है! अपनी संस्कृति के कारण भारत को विश्वगुरु की पहचान मिली थी। ऐसा इसलिए था क्योंकि भारत ने मार्गदर्शक बनकर पूरे विश्व को एक नई दिशा दिखाई थी।

Page : 126 , Block Name : प्रश्न अभ्यास

Q5 सिंधु घाटी सभ्यता के अंत के बारे में अनेक विद्वानों के कई मत हैं। आपके अनुसार इस सभ्यता का अंत कैसे हुआ होगा, तर्क सहित लिखिए।

Answer.सिंधु घाटी सभ्यता के अंत के विषय में विद्वानों के भिन्न-भिन्न मत रहे हैं-

(1) कुछ विद्वान मानते हैं कि अकस्मात किसी दुर्घटना के कारण इस सभ्यता का अंत हो गया, पर इसका प्रमाण किसी के पास नहीं है।

(2) कुछ मत के अनुसार, सिंधु सभ्यता सिंधु नदी के किनारे बसी थी। यह नदी भंयकर बाढ़ों के लिए प्रसिद्ध है। इन्हीं बाढ़ों के कारण इस घाटी का अंत हो गया होगा।

(3) कुछ मत के अनुसार तो मौसम परिवर्तन से ज़मीन सूख गई हो और उपजाऊ भूमि रेगिस्तान में बदल गई हो। इस मत के तो कुछ सबूत भी मिलते हैं। जैसे- खुदाई के दौरान मोहनजोदड़ो सभ्यता के खंडहर बालू की सतह के

नीचे मिले हैं। विद्वानों के अनुसार बालू के कारण ज़मीन की सतह ऊँची उठती गई और नगरवासियों को मजबूर होकर पुरानी नींवों पर ऊँचाई पर मकान बनाने पड़े।

मेरे अनुसार बदलते मौसम के कारण उपजाऊ भूमि का रेगिस्तान में बदल जाना इस सभ्यता के अंत की शुरूआत रहा होगा क्योंकि एक सभ्यता एक ही स्थान पर इतने लंबे समय तक प्रगति की ओर अग्रसर होती रही हो, वो यूंही तो नहीं उजड़ सकती। यदि कोई बड़ी दुर्घटना घटी होती तो प्रमाण हमें अवश्य मिलते। दूसरा नदी में बाढ़ के कारण तो ये भी थोड़ा भ्रम सा उत्पन्न करता है परन्तु यदि यह सत्य है तो इसका कोई कारण नहीं दिखता आज भी भारत के कई हिस्सों में बाढ़ आती है और हर दूसरे वर्ष आती है। इससे बर्बादी अवश्य होती है पर एक सभ्यता का नाश हो जाए इस मत का समर्थन करने का मन नहीं करता। इसलिए विद्वानों द्वारा तीसरे मत से ही सहमति लगती है कि इस सभ्यता का अंत मौसम के परिवर्तन के कारण रहा होगा क्योंकि मौसम ने उनकी कृषि सम्बन्धी व भरण-पोषण सम्बन्धी समस्याओं को उत्पन्न कर वहाँ की भूमि को रेगिस्तान में तबदील कर उस सभ्यता को दम तोड़ने पर मजबूर कर दिया।

Page : 127 , Block Name : प्रश्न अभ्यास

Q6 उपनिषदों में बार-बार कहा गया है कि-"शरीर स्वस्थ हो मन स्वच्छ हो और तन-मन दोनों अनुशासन में रहें।" आप अपने दैनिक क्रिया-कलापों में इसे कितना लागू कर पाते हैं? लिखिए।

Answer. मैंने अपने दैनिक जीवन में कुछ अच्छी चीज़ें सम्मिलित की है जिससे मेरा तन-मन दोनों ही अनुशासन में रहते हैं। मैं प्रातः जल्दी उठता हूँ और रात्रि में जल्दी सोता हूँ। मैं कोशिश करता हूँ कि मेरा हर कार्य समय पर होजाए।मैं नियमित रूप से कसरत करता हूँ और संतुलित आहार लेता हूँ ताकि मेरा शरीर स्वस्थ रहे। मन की स्वच्छता के लिए मैं अपने मस्तिष्क में सकारात्मक विचारों को ही जगह देता हूँ।मेरी पूरी कोशिश रहती है कि मैं नकारात्मकता से दूर रहूँ।

उपनिषदों में कहीं गई बात कि "शरीर स्वस्थ हो मन स्वच्छ हो और तन-मन दोनों अनुशासन में रहें" पूर्णता सत्य है क्योंकि यह वास्तव में ही जीवन जीने का तरीक़ा है।

Page : 127 , Block Name : प्रश्न अभ्यास

Q7 नेहरू जी ने कहा कि-"इतिहास की उपेक्षा के परिणाम अच्छे नहीं हुए।" आपके अनुसार इतिहास लेखन में के या-क्या शामिल किया जाना चाहिए? एक सूची बनाइए और उस पर कक्षा में अपने साथियों और अध्यापकों से चर्चा कीजिए।

Answer.नेहरू जी का कहना कि "इतिहास की उपेक्षा के परिणाम अच्छे नहीं हुए" बिलकुल सटीक बात है।हमारा इतिहास हमारे बीते कल की गाथा गुनगुनाता है। अपने पिछले कल में हमने क्या किया, क्या खोया, क्या पाया यह सब हमारा इतिहास अपने आप में संजोये रखता है।इतिहास में हमारे पूर्वजों की स्मृतियाँ बसी हुई है। यदि हम इतिहास की उपेक्षा करते हैं तो ये हमारे बीते कल और पूर्वजों की भी उपेक्षा होती है। अगर हम अपने बीते कल को कोसेंगे तो यह बात बिलकुल सत्य है कि हम अपने आने वाले कल को कभी अच्छा नहीं बना पाएंगे। इसलिए इतिहास की उपेक्षा न करके हमें इसे एक आईने के तौर पर देखना चाहिए और संभाल कर रखना चाहिए।

यदि हम इतिहास लेखन का कार्य करें तो इसके लिए हमें कुछ मानकों की आवश्यकता होती है। इतिहास यानी कि बीते कल में जो घटनाएँ मुख्य रूप से घटी हैं और जिन व्यक्तियों के द्वारा जिस जगह पर घटीं हैं उसका विवरण दर्ज

aglasem.com

करना ज़रूरी होता है। इसके लिए हम तिथियों, शिलालेखों और खंडहर के अवशेषों के द्वारा जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

Page : 127 , Block Name : प्रश्न अभ्यास

Q8 “हमें आरंभ में ही एक ऐसी सभ्यता और संस्कृति की शुरुआत दिखाई पड़ती है जो तमाम परिवर्तनों के बावजूद आज भी बनी हुई है।” आज की भारतीय संस्कृति की ऐसी कौन-कौन सी बातें/चीजें हैं, जो हजारों साल पहले से चली आ रही हैं। आपस में चर्चा करके पता लगाइए।

Answer.हमारी संस्कृति और सभ्यता वास्तव में बहुत पुरानी है और काफ़ी समय से चली आ रही है। समय समय पर हमारी मातृभूमि पर अनेक सभ्यताओं के लोग आए जिन्होंने हमारी संस्कृति को प्रभावित करने की चेष्टा की किन्तु तब भी हमारी संस्कृति अपने मूल रूप में ही रही। इसका कारण है कि हमारी संस्कृति के तत्व अमर हैं। हमारी संस्कृति में त्याग की भावना, सत्य की राह,मातृभूमि से लगाव और प्यार, परिवार के प्रति समर्पण, अतिथि और गुरु का सर्वोपरि स्थान, अहिंसा और परोपकार जैसे तत्व व्याप्त हैं। ये सारी चीज़ें हज़ारों साल से चली आ रही हैं और आज भी वैसी की वैसी हैं।

Page : 127 , Block Name : प्रश्न अभ्यास

Q9 आपने पिछले साल (सातवीं कक्षा में) बाल महाभारत कथा पढ़ी। भारत की खोज में भी महाभारत के सार को सूत्रबद्ध करने का प्रयास किया गया है-“दूसरों के साथ ऐसा आचरण नहीं करो जो तुम्हें खुद अपने लिए स्वीकार्य न हो। आप अपने साथियों से कैसे व्यवहार की अपेक्षा करते हैं और स्वयं उनके प्रति कैसा व्यवहार करते हैं? चर्चा कीजिए।

Answer.हमें दूसरों के साथ वही आचरण करना चाहिए जो आचरण हम अपने लिए चाहते हैं। इसलिए हमें ये देखना चाहिए कि हम दूसरों से सही व्यवहार कर रहे हैं या नहीं। मैं जब भी अपने दोस्तों से बात करता हूँ तो इस बात का ख्याल रखता हूँ कि मैं बहुत ही शालीनता से ही उनसे पेश आऊँ।मैं गुस्से जैसी भावना से बिलकुल दूर रहता हूँ क्योंकि ग़ुस्सा सिर्फ़ नुक़सान पहुँचाता है।इसी प्रकार मैं अपने दोस्तों से उम्मीद करता हूँ कि वे अपनी कोई भी बात बिलकुल आराम और शालीनता से कहें।वे स्वार्थ और हिंसा जैसी भावना से बिलकुल दूर रहें। मैं अपने साथियों से नर्म व्यवहार की अपेक्षा करता हूँ क्योंकि मैं भी उनके लिए विनम्र आचरण रखता हूँ।

Page : 127 , Block Name : प्रश्न अभ्यास

Q10 प्राचीन काल से लेकर आज तक राजा यह सरकार द्वारा ज़मीन और उत्पादन पर कर लगाया जाता रहा है। आज कल हम इन वस्तुओं और सेवाओं पर कर देते हैं सूची बनायी है

Answer.आज कल हम लगभग अपनी हर चीज़ पर कर देते हैं।हम अपने खाद्य पदार्थों से लेकर अपने दैनिक जीवन में प्रयोग होने वाली छोटी से छोटी वस्तु पर कर देते हैं।हम अपने रहने का भी कर देते हैं। यदि हम कोई व्यापार करते हैं तो हमें उस पर होने वाले मुनाफ़े अर्थात लाभ का भी कर देना पड़ता है।

Page : 127 , Block Name : प्रश्न अभ्यास

Q11 (क) प्राचीन समय में विदेशों में भारतीय संस्कृति के प्रभाव के दो उदाहरण बताइए।

aglasem.com

(ख) वर्तमान समय में विदेशों में भारतीय संस्कृति के कौन-कौन से प्रभाव देखे जा सकते हैं? अपने साथियों के साथ मिलकर एक सूची बनाइए। (संकेत-खान-पान, पहनावा, फ़िल्में हिंदी, कंप्यूटर, टेलीमार्केटिंग आदि)

Answer.प्राचीन समय में विदेशों में भारत की संस्कृति का काफ़ी प्रभाव फैला था।हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म का प्रचार पूरी दुनिया में किया गया था। इसी प्रकार हमारी सभ्यता में अतिथि सत्कार को काफ़ी सराहना मिलती थी और इसका असर विदेशों में ये देखने को मिला कि लोग हमारे लोगों का भी उसी प्रकार सत्कार करते थे।

बात यदि वर्तमान समय की करें तो आज भी हमारी संस्कृति और सभ्यता का प्रभाव विदेशों में ज़ोर शोर से हो रहा है।आज हमारे 56 प्रकार के भोग पूरे विश्व में पसंद किए जाते हैं। हमारी संस्कृति में व्याप्त “वसुधैव कुटुम्बकम” की भावना को काफ़ी सराहना मिलती है। आज विदेशों में हमारे हिंदी सिनेमा को काफ़ी पसंद किया जाता है। इतना ही नहीं, भारतीय साड़ी और ललित कलाओं को भी विदेशों में काफ़ी पसंद किया जाता है।

Page : 127 , Block Name : प्रश्न अभ्यास

Q12 पृष्ठ संख्या 34 पर कहा गया है कि जातकों में सौदगारों की समुद्री यात्राओं, यातायात के हवाले भरे हुए हैं। विश्व/ भारत के मानचित्र में उन स्थानों/रास्तों को खोजिए, जिनकी चर्चा इस पृष्ठ पर की गई।

Answer.छात्र स्वयं उत्तर को हल करें।

Page : 128 , Block Name : प्रश्न अभ्यास

Q13 .कौटिल्य के अर्थशास्त्र में अनेक विषयों की चर्चा है, जैसे, “व्यापार और वाणिज्य, कानून और न्यायालय, नगर व्यवस्था, सामाजिक रीति-रिवाज, विवाह और तलाक, स्त्रियों के अधिकार, कर और लगान, कृषि, खानों और कारखानों को चलाना, दस्तकारी, मंडियाँ, बागवानी, उद्योग-धंधे, सिंचाई और जलमार्ग, जहाज़ और जहाजरानी, निगमें, जन-गणना, मत्स्य-उद्योग, कसाई खाने, पासपोर्ट और जेल-सब शामिल हैं। इसमें विधवा विवाह को मान्यता दी गई है और विशेष परिस्थितियों में तलाक को भी।” वर्तमान में इन विषयों की क्या स्थिति है? अपनी पसंद के किन्हीं दो-तीन विषयों पर लिखिए।

Answer.कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में अनेक विषयों की चर्चा की है और उसमें से आज लगभग हर वस्तु पहले से ज़्यादा आधुनिक और विकसित हो चुकी है। बात यदि क़ानून और न्यायालय की करें तो आज हर व्यक्ति न्याय पाने के लिए भी स्वतंत्र है। आज हर किसी को मौलिक अधिकार प्रदान किए गए हैं जो पहले राजा महाराजाओं के समय में नहीं दिए जाते थे। व्यापार की दृष्टि से भी भारत ने काफ़ी विकास किया है। आज भारत से कई वस्तुओं का बाहर निर्यात किया जाता है।महिलाओं की स्थिति काफ़ी बेहतर हो गई है।आज विधवा विवाह को मान्यता तो प्राप्त है ही इसके साथ ही विधवा को हेय दृष्टि से नहीं देखा जाता है। महिलाओं को स्वतंत्रता प्रदान की गई है और वे आज पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं।

Page : 128 , Block Name : प्रश्न अभ्यास

Q14 आजादी से पहले किसानों की समस्याएँ निम्नलिखित थीं “गरीबी, कर्ज, निहित स्वार्थ, जमींदार, महाजन, भारी लगान और कर, पुलिस के अत्याचार- “आपके विचार से आजकल किसानों की समस्याएँ कौन-कौन सी हैं?

aglasem.com

Answer.आज़ादी से पहले किसानों की काफ़ी समस्याएं थीं और आज भी किसानों को लगभग उन समस्याओं से दो चार होना पड़ता है। आज भी किसानों को ग़रीबी, कर्ज़, धन के संसाधनों के अभाव जैसी समस्याओं से जूझना पड़ता है।कई बार तो ऐसा होता है कि किसानों के ऊपर इतना कर्ज़ हो जाता है कि वह आत्महत्या तक कर लेते हैं।

Page : 128 , Block Name : प्रश्न अभ्यास

Q15 "सार्वजनिक काम राजा की मर्जी के मोहताज नहीं होते, उसे खुद हमेशा इनके लिए तैयार रहना चाहिए।" ऐसे कौन-कौन से सार्वजनिक कार्य हैं जिन्हें आप बिना किसी हिचकिचाहट के करने को तैयार हो जाते हैं?

Answer.कुछ ऐसे कार्य होते हैं जिनके लिए हमें किसी राजा, महाराजा या सरकार से आज्ञा लेने की आवश्यकता नहीं होती है।हम उन्हें एक जागरूक नागरिक के तौर पर कर सकते हैं।ऐसे ही कुछ काम है जो हमें करने ही चाहिए जैसे वृक्षारोपण करना।पर्यावरण की सुरक्षा के लिए हम वृक्ष लगा सकते हैं।अपने आस पास व्याप्त गंदगी को साफ़ करके हम जागरूक नागरिक होने का सबूत दे सकते हैं।सड़क पर कोई पत्थर या कोई बेसहारा जानवर हो तो उसे किनारे करके भी हम सार्वजनिक कार्य में मदद दे सकते हैं।लड़कियों की शिक्षा और उनकी सुरक्षा करके हम नारी कल्याण में सहयोग दे सकते हैं। इसी प्रकार ग़रीब बच्चों और उनके परिवारों के लिए सुविधाएँ जुटाकर हम उनकी मदद कर सकते हैं।

Page : 128 , Block Name : प्रश्न अभ्यास

Q16 महान सम्राट अशोक ने घोषणा की कि वह प्रजा के कार्य और हित के लिए हर स्थान पर और हर समय हमेशा उपलब्ध हैं। हमारे समय के शासक/लोक-सेवक इस कटौती पर कितना खरा उतरते हैं? तर्क सहित लिखिए।

Answer.बाद यदि महान सम्राट अशोक की घोषणा की करें कि वे प्रजा के कार्य और हित के लिए हर स्थान पर और हर समय हमेशा उपलब्ध हैं तो यह आज के नेताओं पर लागू नहीं होता है। आज कल हम जिन नेताओं को अपना प्रतिनिधित्व और नेतृत्व करने के लिए चुनते हैं वे सिर्फ़ खोखले वादे और घोषणाएँ करते हैं। वे सिर्फ़ उस समय हमारे सामने आते हैं जब उन्हें वोट चाहिए होता है। उस समय वे हमें अनेक सपने दिखाते हैं और विकास के वायदे करते हैं।

Page : 128 , Block Name : प्रश्न अभ्यास

Q17 "औरतों के परदे में अलग-अलग रहने से सामाजिक जीवन के विकास में रुकावट आई।" कैसे?

Answer.औरतों का पर्दे में रहने के कारण सामाजिक जीवन के विकास में रुकावट आयी है। यदि बात करें औरतों के पर्दे और सामाजिक विकास में रुकावट की तो पर्दे के कारण औरतों घर की चारदीवारी में सिमटकर रह गयी हैं। एक तरह से वे पुरुषों पर निर्भर हो गई हैं। कहीं कहीं पर तो पर्दे के कारण औरतों की शिक्षा और उनके स्वास्थ्य का भी कोई ख्याल नहीं रखा जाता।

Page : 128 , Block Name : प्रश्न अभ्यास

Q18 मध्य काल के इन संत रचनाकारों की अनेक रचनाएँ अब तक आप पढ़ चुके होंगे। इन रचनाकारों की एक-एक रचना अपनी पसंद से लिखिए-

1. अमीर खुसरो

2. कबीर
3. गुरुनानक
4. रहीम

Answer.

1. अमीर खुसरो- -पहेलियाँ एवं मुकरियां
2. कबीर-बीजक, (साखी, सबद व रमैनी)
3. गुरु नानक देव- गुरुग्रंथ साहिब
4. रहीम- रहीम के दोहे

Page : 128 , Block Name : प्रश्न अभ्यास

Q19 बात को कहने के तीन प्रमुख तरीके अब तक आप जान चुके होंगे-

(क) अभिधा

(ख) लक्षणा

(ग) व्यंजना

बताइए, नेहरू जी का निम्नलिखित वाक्य इन तीनों में से किसका उदाहरण है? यह भी बताइए कि आपको ऐसा क्यों लगता है?

"यदि ब्रिटेन ने भारत में यह बहुत भारी बोझ नहीं उठाया होता (जैसा कि उन्होंने हमें बताया है) और लंबे समय तक हमें स्वराज्य करने की वह कठिन कला नहीं सिखाई होती, जिससे हम इतने अनजान थे, तो भारत न केवल अधिक स्वतंत्र और अधिक समृद्ध होता .... बल्कि उसने कहीं अधिक प्रगति की होती।"

Answer.व्यंजना शब्द शक्ति का उदाहरण है।

इस वाक्य के द्वारा अंग्रेज़ों पर निंदा की गई है।अंग्रेज़ हम पर राज करते थे और वे कहते थे कि वे हमें स्वराज्य की कला सिखा रहे हैं। उनके अनुसार वे भारतीयों को एक पाठ पढ़ा रहे थे कि किस प्रकार अपना देश चलाया जाता है।असल में वे हमें कुछ सिखा नहीं रहे थे बल्कि वे हमें गुलाम बना रहे थे। इस निंदा के द्वारा उन्हें यह संदेश दिया गया है कि अगर वे भारत पर राज न करते तो भारत बहुत पहले ही स्वतंत्र और अत्यधिक समृद्ध हो गया होता। उन्होंने भारत को असल में लूटा और अपनी नीतियों को भारतीयों पर ज़बरदस्ती थोपा। इस प्रकार वे भारतीयों का शोषण करते रहे और भारत का विकास नहीं होने दिया।

Page : 129 , Block Name : प्रश्न अभ्यास

Q20 "नयी ताकतों ने सिर उठाया और वे हमें ग्रामीण जनता की ओर ले गईं। पहली बार एक नया और दूसरे ढंग का भारत उन युवा बुदधिजीवियों के सामने आया...' आपके विचार से आज़ादी की लड़ाई के बारे में कही गई ये बातें किस नयी ताकत' की ओर इशारा कर रही हैं? वह कौन व्यक्ति था और उसने ऐसा क्या किया जिसने ग्रामीण जनता को भी आज़ादी की लड़ाई का सिपाही बना दिया?

Answer.आज़ादी के समय भारत तीन वर्गों में विभाजित था-उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग और निम्न वर्ग।उच्च वर्ग के लोगों को समाज में सम्मान प्राप्त था और वे बड़े बड़े लोगों अर्थात अंग्रेज़ अफ़सरों के साथ उठते बैठते थे।अंग्रेज़ भी उस वर्ग की काफ़ी इज़्ज़त करते थे। निम्न वर्ग समाज में हेय दृष्टि से देखा जाता था और उसे सामाजिक कार्यों में भाग लेने की अनुमति नहीं थी। इस प्रकार उच्च वर्ग और निम्न वर्ग दोनों के काम बँटे थे जबकि मध्यम वर्ग के साथ ऐसा कोई स्पष्ट चित्र नहीं था।

मध्यम वर्ग के लोग नाही अत्यधिक सम्मान पाते थे और न ही वे गिरे हुए गिने जाते थे। इस प्रकार मध्यम वर्ग के लोग सिर्फ़ अपनी चिंता में लगे रहते थे और वे दूसरों के मामले में दखलंदाजी नहीं करते थे।किन्तु फिर एक समय ऐसा आया जब मध्यम वर्ग को उसकी ताक़त का एहसास दिलाया गया। मध्यम वर्ग के लोगों को उनके कर्तव्यों के प्रति जागरूक किया गया जिससे वे भी आज़ादी के लिए तन कर खड़े हो गये। यह वर्ग आज़ादी के लिए वास्तव में काफ़ी महत्वपूर्ण साबित हुआ। उपर्युक्त वाक्य मध्यम वर्ग की ओर ही इशारा करता है कि किस प्रकार उसने अपनी ताक़त का प्रयोग करके भारत के आज़ादी आंदोलन में अपना सहयोग दिया।

Page : 129 , Block Name : प्रश्न अभ्यास

Q21 'भारत माता की जय' आपके विचार से इस नारे में किसकी जय की बात कही जाती है? अपने उत्तर का कारण भी बताइए।

Answer."भारत माता की जय" का अर्थ भारत की भूमि और भारत में पाई जाने वाली हर वस्तु के सम्मान से है।जब हम भारत माता की जय बोलते हैं तो इसका अर्थ होता है कि हमने भारत की भूमि, नदियाँ, पर्वत, पशु-पक्षी, सागर-महासागर और भारत के हर नागरिक के सम्मान के लिए आवाज़ उठायी। इस प्रकार ये सारी चीज़ें ही भारत से जुड़ी हुई साबित हो जाती हैं।इस प्रकार भारत माता की जय बोलकर हम भारतीय मूल्यों की भी जयकार कर लेते हैं।

Page : 129 , Block Name : प्रश्न अभ्यास

Q22 (क) भारत पर प्राचीन काल से ही अनेक विदेशी आक्रमण होते रहे। उनकी सूची बनाइए। समय क्रम में बनाएँ तो और भी अच्छा रहेगा।

(ख) आपके विचार से भारत में अंग्रेज़ी राज्य की स्थापना इससे पहले के आक्रमणों से किस तरह अलग है?

Answer.(क) भारत पर प्राचीन काल में होने वाले आक्रमणों को निम्नलिखित रूप में सूचीबद्ध किया जा सकता है-

महमूद गजनवी, मोहम्मद गोरी, नादिर शाह, अफ़ग़ानियों का आक्रमण, मंगोलों का आक्रमण, तुर्कों का आक्रमण, अंग्रेज़ों का आक्रमण।

(ख) अंग्रेज़ों का भारत पर आक्रमण और राज्य करने का तरीक़ा पहले के आक्रमणों और लोगों के राज्य करने के तरीक़े से बिलकुल अलग था।अंग्रेज़ों के पहले जितने भी शासकों ने भारत पर राज्य किया उन्होंने भारत को लूटा और इसके विपरीत भारत को रचाया बसाया भी। उन्होंने भारत में अनेक इमारतों का निर्माण कराया।भारत की सुंदरता में चार चाँद लगाने के तरीक़े खोजे और भारत की संस्कृति को अपनाया व उसका प्रचार प्रसार भी किया।

अंग्रेजों ने भारत पर राज्य किया, भारत पर आक्रमण किया, भारत को लूटा और इन सबके साथ साथ भारत और भारतीयों को अपना गुलाम बनाया। उन्होंने भारतीयों पर अत्याचार की सीमा पार कर दी।भारतीयों को तरह तरह की यातनाएं दीं और बहुत से भारतीयों को मौत के घाट उतार दिया।वे भारतीयों को गुलाम की दृष्टि से देखते थे। जिन

aglasem.com

जिन भारतीयों ने अंग्रेजों के ख़िलाफ़ अपनी आवाज़ उठायी अंग्रेज़ों ने उन्हें मार डाला। यहाँ तक कि जब वे देश छोड़कर जा रहे थे तब भी वे देश का बँटवारा करके गए और आपस में फूट डाली। इसके साथ ही उन्होंने भारत की क़ीमती धरोहर को भी चुरा लिया और अपने साथ ले गए।

Page : 129 , Block Name : प्रश्न अभ्यास

Q23 (क) अंग्रेजी सरकार शिक्षा के प्रसार को नापसंद करती थी, क्यों?

(ख) शिक्षा के प्रसार को नापसंद करने के बावजूद अंग्रेज़ी सरकार को शिक्षा के बारे में थोड़ा बहुत काम करना पड़ा/क्यों?

Answer.(क) अंग्रेज़ी सरकार भारतीयों की शिक्षा दीक्षा के ख़िलाफ़ थी क्योंकि शिक्षा के कारण भारतीयों में जागरूकता उत्पन्न हो जाती। अंग्रेज़ चाहते थे कि वे भारत पर बिना किसी रुकावट के राज करें।अगर भारतीयों में शिक्षा दीक्षा नहीं होगी तो उनके ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने वाला कोई नहीं होगा क्योंकि स्वराज जैसी भावना उनके अंदर नहीं आएगी। इसलिए बिना किसी अड़चन के राज करने हेतु वे चाहते थे कि भारतीयों में किसी प्रकार की कोई जागरूकता ना आए और वे अशिक्षित ही रहें।

(ख) अंग्रेज़ी सरकार भारतीयों की शिक्षा दीक्षा के ख़िलाफ़ थी लेकिन इसके बावजूद उसे शिक्षा का प्रसार प्रचार करना पड़ा। इसका कारण यह था कि अंग्रेजों को कम वेतन पर मज़दूरों और क्लर्कों की आवश्यकता थी। ऐसे क्लर्क जो अत्याचार और कम वेतन लेकर भी अंग्रेजों के ख़िलाफ़ आवाज़ न उठाएँ और उनका काम भी करते रहें। अंग्रेज़ी लोग ख़ुद जब पढ़ लिख जाते थे तो वे कम वेतन पर काम नहीं करना चाहते थे। वे अपनी सरकार से इस बात की डिमांड रखते थे कि उन्हें पूरा वेतन और सुविधाएँ प्रदान की जाएँ। वे किसी प्रकार की कोई गुलामी नहीं करते थे। इसके विपरीत भारतीय ऐसा कोई प्रस्ताव नहीं रखते थे और चुपचाप कार्य करने को तैयार हो जाते थे। इसलिए उन्हें शिक्षा का प्रचार प्रसार करना पड़ा।

aglasem.com

Page : 129 , Block Name : प्रश्न अभ्यास

Q24 ब्रिटिश शासन के दौर के लिए कहा गया कि-“नया पूँजीवाद सारे विश्व में जो बाज़ार तैयार कर रहा था उससे हर सूरत में भारत के आर्थिक ढाँचे पर प्रभाव पड़ना ही था।” क्या आपको लगता है कि अब भी नया पूँजीवाद पूरे विश्व में जो बाज़ार तैयार कर रहा है, उससे भारत के आर्थिक ढाँचे पर प्रभाव पड़ रहा है? कैसे?

Answer. नये पूंजीवाद ने जो बाज़ार तैयार किया है उससे भारत के आर्थिक साँचे पर काफ़ी असर पड़ रहा है। पर ये असर असल में नकारात्मक है। भारतीय युवा पीढ़ी किसी न किसी तरह धन कमाने के सपने देखने लगी है और इस प्रकार वे विदेशों को अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं । इस कारण भारत की अपनी पूंजी बाहर जा रही है और भारत को नुक़सान पहुँच रहा है। सिर्फ़ इतना ही नहीं बल्कि भारत के अपने बाज़ार भी बाहरी वस्तुओं से भरे पड़े हैं। ये न सिर्फ़ भारत की अर्थव्यवस्था को नुक़सान पहुँचा रहे हैं बल्कि भारतीय संस्कृति के लिए ख़तरा भी बन रही हैं। वे भारतीयों को काफ़ी मात्रा में प्रभावित कर रही हैं और अपना वर्चस्व भारत पर क़ायम कर रही हैं।

Page : 129 , Block Name : प्रश्न अभ्यास

Q 25:गांधी जी के दक्षिण अफ्रीका से लौटने पर निम्नलिखित में किस तरह का बदलाव आया, पता कीजिए-

(क) कांग्रेस संगठन में।

(ख) लोगों में विद्यार्थियों, स्त्रियों, उद्योगपतियों आदि में।

(ग) आजादी की लड़ाई के तरीकों में।

(घ) साहित्य, संस्कृति, अखबार आदि में।

Answer.(क) कांग्रेस संगठन में बदलाव इस प्रकार देखने को मिला कि कांग्रेसी आपस में अपने बैर भुलाकर एक हो गए।वे अब सिर्फ़ एक उद्देश्य को लेकर चलने लगे कि उन्हें हर हाल में अंग्रेजों के ख़िलाफ़ आवाज़ उठानी है और देश को स्वतंत्र कराना है।

(ख) गांधी जब वापस लौटे तो उनके व्यक्तित्व और स्वराज्य की भावना से जुड़े विचारों ने विद्यार्थियों, स्त्रियों और उद्योगपतियों अर्थात हर भारतीय में स्वराज्य की ज्वाला भड़का दी। भारत का हर वर्ग सब कुछ भुलाकर बस स्वराज्य पाने के उद्देश्य में जुट गया।

(ग) आज़ादी की लड़ाई का तरीक़ा बदल गया।जहाँ पहले खून ख़राबा और मार-काट से स्वराज की माँग रखी जाती थी वहीं अब सत्य और अहिंसा का मार्ग अपनाया गया।गांधी जी की सत्य और अहिंसा के आंदोलन ने अंग्रेजों के इरादों को हिलाकर रख दिया।

(घ) स्वराज्य की भावना कुछ इस प्रकार लोगों में रच बस गई कि अब हर कोई अंग्रेजों के ख़िलाफ़ होने लगा था।अख़बारों में, किताबों और आम जनता के बीच आंदोलन के विचारों का प्रचार प्रसार होने लगा।लोगों के बीच स्वराज पाने की लालसा आम हो गई। अंग्रेज़ों की दमनकारी नीति के ख़िलाफ़ हर जगह प्रचार प्रसार होने के कारण अंग्रेज़ों का भारतीयों पर बिना रुकावट के राज्य करने का सपना टूटने लगा था।

aglasem.com

Page : 130 , Block Name : प्रश्न अभ्यास

Q26 “अक्सर कहा जाता है कि भारत अंतर्विरोधों का देश है।” आपके विचार से भारत में किस-किस तरह के अंतर्विरोध हैं? कक्षा में समूह बनाकर चर्चा कीजिए।

(संकेत-अमीरी-गरीबी, आधुनिकता-मध्ययुगीनता, सुविधा-संपन्नता-सुविधाविहीन आदि)

Answer.भारत अंतर्विरोधों का देश है इसका मतलब है कि भारत अंदरूनी मार को झेलता रहता है।हम इस बात को इस प्रकार कह सकते हैं कि भारत में रहने वाले लोग आपस में एक दूसरे से बैर दिखाते हैं। एक तरफ़ जहाँ भारत में अमीर तबका है तो वहीं दूसरी ओर भारत में ग़रीब लोगों की संख्या भी काफ़ी ज़्यादा है।अमीरों और गरीबों में हमेशा बैर की भावना चलती रहती है।इसके अलावा भारत में धार्मिक और सांप्रदायिक दंगे होना तो बेहद साधारण बात है। यहाँ लोग धर्म के नाम पर लड़ते रहते हैं। हम भले ही बाहर के लोगों से सुरक्षित है क्योंकि सीमा पर हमारे जवान पहरा दे रहे हैं किन्तु हमारा देश अंदर से ही खोखला होता जा रहा है। इस प्रकार भारत में अंदरूनी मार काफ़ी ज़्यादा है।

Page : 130 , Block Name : प्रश्न अभ्यास

Q27 पृष्ठ संख्या 122 पर नेहरू जी ने कहा है कि-”हम भविष्य की उस ‘एक दुनिया की तरफ़ बढ़ रहे हैं जहाँ राष्ट्रीय संस्कृतियाँ मानव जाति की अंतरराष्ट्रीय संस्कृति में घुलमिल जाएँगी।” आपके अनुसार उस ‘एक दुनिया में क्या-क या अच्छा है और कैसे-कैसे खतरे हो सकते हैं?

Answer.जिस दिन सारी संस्कृतियाँ आपस में मिल गयीं और सबके जीवन जीने का तरीक़ा एक हो गया वह दिन वास्तव में पूर्णतः का दिन होगा। ये वास्तव में काफ़ी सुकून देने वाला दिन होगा कि अब आपस में कोई भेदभाव नहीं रह गया।सारे लोग एक ही धर्म का पालन करेंगे जो सिर्फ़ मानवता का होगा। लोग एक साथ चलेंगे और सभी का विकास होगा। किसी भी इंसान या किसी भी जाति धर्म को अलग थलग रहने की आवश्यकता नहीं होगी।सब एक दूसरे से घुलेंगे मिलेंगे और आपस में प्यार करेंगे।

Page : 130 , Block Name : प्रश्न अभ्यास

aglasem.com